Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

बहुविकल्पी प्रश्न

1. 'साझा संपत्ति संसाधन' निम्न में से किस भू - उपयोग के अंतर्गत आता है?

(अ) कृषियोग्य व्यर्थ भूमि
(ब) बंजर व व्यर्थ - भूमि
(स) परती भूमि
(द) स्थायी चरागाह क्षेत्र

2. निम्न में से कौन - सा भू - उपयोग संवर्ग नहीं है?

(अ) परती भूमि
(ब) निवल बोया क्षेत्र
(स) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि
(द) सीमांत भूमि

3. उत्पादक सिंचाई में जल की मात्रा रक्षित सिंचाई की तुलना में कैसी होती है?

(अ) अधिक
(ब) कम
(स) बराबर
(द) इनमें से कोई नहीं

4. भारत अधिकतर किस किस्म की कॉफी का उत्पादन करता है?

(अ) लिबेरिका
(ब) नरमा
(स) रोबस्ता
(द) अरेबिका

5. कृषि गहनता क्या है?

(अ) $\frac{100}{\text{सकल बोया गया क्षेत्र}}$
(ब) सकल बोया गया क्षेत्र
(स) $\frac{\text{सकल बोया गया क्षेत्र}}{\text{निवल बोया गया क्षेत्र}} \times 100$
(द) निवल बोया गया क्षेत्र/100

6. वर्तमान परती भूमि कौन - सी भूमि कहलाती है?

(अ) एक कृषि वर्ष से कम समय तक कृषि रहित भूमि
(ब) पाँच कृषि वर्ष तक कृषि रहित भूमि
(स) इनमें से कोई नहीं
(द) दो कृषि वर्ष तक कृषि रहित भूमि

7. स्वामित्व के आधार पर भूमि को कितने वर्गों में विभाजित किया जाता है?

(अ) पाँच
(ब) तीन
(स) चार
(द) दो

8. शुष्क कृषि में निम्न में से कौन - सी फ़सल नहीं बोई जाती?

(अ) मूँगफली
(ब) ज्वार
(स) गन्ना
(द) रागी

मिशन ज्ञान
पढ़ें : जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

9. **निम्न में से कौन - सा HYV को सही अभिव्यक्त करता है?**

(अ) भारत सरकार का एक विभाग
(ब) उच्च उत्पादकता वाली किस्में
(स) उच्च प्रौद्योगिकी
(द) कृषि विकास से जुड़ा एक कार्यक्रम

10. **निम्नलिखित में से कौन - सी पश्चिम बंगाल की प्रमुख फसल है?**

(अ) जूट
(ब) गेहूँ
(स) गन्ना
(द) कपास

रिक्त स्थान

11. चावल एक उष्ण _____ कटिबंधीय फसल है।

12. दलहनी फसलें _____ योगीकरण द्वारा मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता को बढ़ाती है।

सत्य/असत्य

13. मूँगफली मुख्यत: शुष्क प्रदेशों की वर्षा आधारित खरीफ फसल है।

14. मूँगफली दक्षिण भारत में रबी की ऋतु में बोई जाती है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. अल्प रोजगारी से क्या तात्पर्य है?

16. कृषि योग्य व्यर्थ भूमि से क्या तात्पर्य है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. 'छोटी कृषि जोत' और 'कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण' भारतीय कृषि की दो प्रमुख समस्याएँ किस प्रकार हैं? इन दोनों समस्याओं को उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

18. भारत में भू - संसाधनों की विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएँ कौन - सी हैं? उनका निदान कैसे किया जाए?

निबंधात्मक प्रश्न

19. भारतीय कृषि की समस्याओं का वर्णन कीजिए।

20. भारत में गेहूँ के उत्पादन की अनुकूल भौगोलिक दशाओं का विवरण तथा इसकी खेती के प्रमुख क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

HOTS

21. भारतीय कृषि की समस्याओं के समाधान के लिए किए गए किन्हीं पाँच उपायों की समीक्षा कीजिए।

मिशन ज्ञान
जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
VIDEO COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan

JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

1. **(द)**
'साझा संपत्ति संसाधन' स्थायी चरागाह क्षेत्र के अंतर्गत आता है। साझा संपत्ति संसाधनों के प्रयोग पर सभी का अधिकार होता है, जिस कारण से इसे सामुदायिक प्राकृतिक संसाधन भी कहते हैं।
2. **(द)** सीमांत भूमि
3. **(अ)** अधिक
4. **(द)**
भारत अधिकतर उत्तम किस्म की अरेबिका कॉफी का उत्पादन करता है।
5. **(स)** सकल बोया गया क्षेत्र/ निवल बोया गया क्षेत्र × 100
6. **(अ)** एक कृषि वर्ष से कम समय तक कृषि रहित भूमि
7. **(द)** दो
8. **(स)** गन्ना
9. **(ब)**
उच्च उत्पादकता वाली किस्में HYV को सही अभिव्यक्त करता है।
10. **(अ)** जूट
11. आर्द्र
12. नाइट्रोजन
13. सत्य
14. असत्य
15. **अल्प रोजगारी से तात्पर्य :** भारत के कृषि क्षेत्र में बड़े पैमाने पर अल्प रोजगारी विधमान है। इस सन्दर्भ में, असिंचित क्षेत्रों में 4 से 8 महीने तक ऋत्विक बेरोजगारी रहती है। फसल ऋतु में भी वर्षभर रोजगार उपलब्ध नहीं होता, क्योंकि कृषि-कार्य लगातार गहन श्रम वाले नहीं हैं। अतः कृषि में अल्प रोजगारी पाई जाती है।
16. इस वर्ग में ऐसी भूमि सम्मिलित की जाती है, जो पिछले पाँच वर्षों से या अधिक समय से परती या कृषि रहित है। इस प्रकार की भूमि को प्रचलित प्रौद्योगिकी की सहायता से कृषि योग्य बनाया जा सकता है।
17. **छोटी कृषि जोत की समस्याएँ :** भारत में अधिकांश सीमांत तथा छोटे कृषकों की संख्या है। 60% से अधिक किसानों के पास एक हेक्टेयर से भी कम भू-जोत है तथा लगभग 40% किसानों की जोतों का आकार तो 0.5 हेक्टेयर से भी कम है। भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है, जिसके कारण जोतों का आकार और भी छोटा होता जा रहा है। देश में अनेक ऐसे राज्य हैं, जहाँ एक बार भी चकबंदी नहीं हुई है तथा जिन राज्यों में एक बार चकबंदी हो चुकी है, वहाँ पुनः चकबंदी की आवश्यकता है, क्योंकि अगली पीढ़ी में भूमि बँटवारे के कारण भू-जोतों का आकार छोटा हो गया है। अतः छोटी भू-जोत आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं होती है।

कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण : कृषि की दोषपूर्ण नीतियों से कृषि योग्यं भूमि के निम्नीकरण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। अति सिंचाई के कारण कृषि भूमि का एक बड़ा भाग जलाक्रांतता, लवणता तथा मृदा क्षरण से बंजर हो चुका है। लवणता एवं क्षारता से लगभग 80 लाख हैक्टेयर भूमि तथा जलाक्रांतता से 70 लाख हेक्टेयर भूमि अपनी उर्वरकता खो चुकी है। कीटनाशकों के अति प्रयोग से मृदा परिच्छेदिका में जहरीले तत्त्वों का सांद्रण हो जाता है तथा मृदा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सिंचित क्षेत्रों के फसल प्रतिरूप के अंतर्गत दलहन फसलों के स्थान पर बहु-फसलीकरण में वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप परती भूमि में कमी आई है। इससे मृदा में पुनः उर्वरकता प्राप्त करने की प्राकृतिक प्रक्रिया बाधित हुई है।

18. भारत में भू-संसाधनों का निम्नीकरण एक मुख्य समस्या है जोकि कृषि विकास की दोषपूर्ण नीतियों के कारण उत्पन्न हुई है। भू-संसाधनों का निम्नीकरण एक मुख्य समस्या इसलिए है क्योंकि इससे मृदा की उर्वरता क्षीण हो गई है। यह समस्या विशेषकर सिंचित क्षेत्रों में ज्यादा भयावह हैं, जिसके निम्नलिखित कारण हैं-

i. कृषि भूमि का एक बड़ा हिस्सा जलाक्रांतता, लवणता तथा मृदा अपरदन के कारण बंजर हो चुका है।

ii. उष्ण कटिबन्धीय आद्र क्षेत्रों में जल द्वारा मृदा अपदन तथा शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वायु अपरदन एक आम समस्या है।

iii. रसायनों, कीटनाशकों, व रासायनिक उर्वरकों क अधिक प्रयोग से मृदा-परिच्छेदिका में जहरीले तत्वों का सांद्रण बढ़ा है।

ऊपर वर्णित सभी समस्याओं का निदान हम उपयुक्त प्रौद्योगिकी व तकनीक विकसित करके कर सकते हैं। साथ ही समस्याओं को जन्म देने वाले क्रियाकलापों को नियंत्रित करना भी बहुत जरूरी है।

19. भारतीय कृषि को कई जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो इसकी उत्पादकता और स्थिरता को प्रभावित करती हैं:

i. **जल संकट:** भारत में अधिकांश कृषि वर्षा पर निर्भर है, जो असमान और अनिश्चित होती है। सूखा और बाढ़ दोनों ही फसल उत्पादन में बाधा डालते हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा में कमी आती है। जलवायु परिवर्तन ने इस समस्या को और भी गंभीर बना दिया है।

ii. **भूमि की उर्वरता में कमी:** लगातार रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग के कारण मिट्टी की उर्वरता घट रही है। यह स्थिति दीर्घकालिक कृषि उत्पादन को प्रभावित करती है और मिट्टी के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाती है।

iii. **असंगठित बाजार:** किसानों को उनके उत्पादों का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। असंगठित बाजारों के कारण मध्यस्थता बढ़ जाती है, जिससे किसानों की आय कम हो जाती है। यह उन्हें वित्तीय संकट में डाल सकता है।

iv. **अधिक जनसंख्या दबाव:** बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि भूमि पर दबाव बढ़ रहा है। शहरीकरण और औद्योगिकीकरण से खेती के लिए उपलब्ध भूमि में कमी आ रही है, जिससे खाद्य उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

v. **ऋणग्रस्तता:** किसान अक्सर उच्च ब्याज दर पर ऋण लेते हैं और अगर मौसम प्रतिकूल होता है, तो वे ऋण चुकता नहीं कर पाते। इससे आत्महत्या जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए आधुनिक कृषि तकनीक, सतत जल प्रबंधन, और उचित वित्तीय सहायता की आवश्यकता है।

21. भारतीय कृषि की समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न उपाय किए गए हैं, जिनमें से पाँच प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं:

i. **सूचना और प्रौद्योगिकी का उपयोग:** कृषि में तकनीकी सुधार के लिए डिजिटल प्लेटफार्मों और मोबाइल ऐप्स का उपयोग किया जा रहा है। ये किसान को मौसम की जानकारी, बाजार मूल्य और फसल संबंधी सलाह प्रदान करते हैं, जिससे वे बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

ii. **सिंचाई प्रणाली का विकास:** जल संकट को दूर करने के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY) जैसी योजनाएँ शुरू की गई हैं। ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई तकनीक के माध्यम से पानी की बर्बादी को कम किया जा रहा है, जिससे फसल उत्पादन में वृद्धि हो रही है।

iii. **कृषि ऋण प्रणाली में सुधार:** कृषि के लिए सस्ते और बिना किसी जटिलता के ऋण प्रदान करने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाएँ विकसित की गई हैं। यह किसानों को आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं, जिससे वे कर्ज के जाल में फँसने से बच सकते हैं।

iv. **सहकारी समितियाँ:** किसानों की सहकारी समितियाँ स्थापित की जा रही हैं, जो उन्हें सामूहिक रूप से अपने उत्पादों को बेचने, बेहतर कीमत प्राप्त करने और सामूहिक खरीद करने में सहायता करती हैं। इससे उनकी आय में सुधार होता है।

v. **जलवायु-स्मार्ट कृषि:** जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए जलवायु-स्मार्ट कृषि प्रथाओं को अपनाया जा रहा है। इसमें सूखा-सहनशील फसलों का विकास और सतत कृषि विधियों का उपयोग शामिल है, जो कृषि को अधिक लचीला बनाते हैं।

इन उपायों के माध्यम से भारतीय कृषि को स्थायी और लाभकारी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video Courses | Quiz | PDF | Test Series